ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(11): 77-81
www.allresearchjournal.com
Received: 04-09-2022
Accepted: 08-10-2022

मनोरमा सिंह
शोधार्थिनी, शिक्षा-संकाय, दयालबाग एजुकेशनल, इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मनोरमा सिंह
शोधार्थिनी, शिक्षा-संकाय, दयालबाग एजुकेशनल, इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मनोरमा सिंह

सारांश
21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए, आवश्यक उच्च मांगों के निर्धारण हेतु, शिक्षित होना कुशल बनाने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण, भारत की आकांक्षा के लिए मजबूत आधार सुनिश्चित करने की आवश्यकता होगी । समानता, गुणवत्ता, सुलभता, सामर्थ्यवान बनाने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है । शोध पत्र के उद्देश्य नई शिक्षा नीति-2020 में शिक्षक प्रशिक्षण के संदर्भ में जानना, शिक्षकों के मूल्यांकन के बारे में जानना एवं शिक्षक-प्रशिक्षण व मूल्यांकन से संबंधित निकायों के बारे में जानना। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस तथ्य पर विचार किया गया है, कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को कैसे गतिशील बनाए रखें। नई शिक्षा नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर महत्वपूर्ण जोर दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि "शिक्षक वास्तव में, हमारे बच्चों के भविष्य और उनके माध्यम से देश की भविष्य को आकार देते हैं" समय के साथ बड़े पैमाने पर शोषण के कारण बच्चों को लाइक बनाने वाले सृजनकारों की भूमिका के उदासीनता का रवैया देखने को मिला है । शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं योग्यता आधारित मूल्यांकन करके इस व्यवस्था में परिवर्तन लाना होगा ।

कूटशब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन ।

प्रस्तावना
शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य, मानव को एक ऐसा अच्छा इंसान बनाना होता है, जिसकी सोच, समझ और कार्य, युक्तिसंगत हो, जिसमें दया भाव की अनुभूति शामिल हो, साहस, संकट, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिकता तथा मूल्य के साथ सृजनात्मकता कल्पना शक्ति की क्षमता का भी विकास हो । इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य सक्रिय एवं प्रभावशाली नागरिक तैयार करना है ।

हमारे भारतीय संविधान में उल्लेखित तत्वों के अनुसार समतापूर्ण, समावेशी और बहुलतावादी समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें और साथ ही विश्व भर में भी शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन लाने में सहयोगी बन सके ।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस तथ्य पर विचार किया गया है, कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को कैसे गतिशील बनाए रखें । नई शिक्षा नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर महत्वपूर्ण जोर दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि "शिक्षक वास्तव में हमारे बच्चों के भविष्य और उनके माध्यम से देश की भविष्य को आकार देते हैं" शिक्षकों को गुरु के नाम से संबोधित करके, जो कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को कौशल, ज्ञान एवं आचार-विचार सिखाने का जो पवित्र एवं महान कार्य करता है ऐसे गुरु का सम्मान होना जरूरी होता है जबकि समय के साथ बड़े पैमाने पर शोषण के कारण बच्चों को लाइक बनाने वाले सृजनकारों की भूमिका के उदासीनता का रवैया देखने को मिला है शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं योग्यता आधारित मूल्यांकन करके इस व्यवस्था में परिवर्तन लाना होगा ।

शोध पत्र के उद्देश्य

- नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक प्रशिक्षण के संदर्भ में जानना ।
- नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के मूल्यांकन के बारे में जानना ।
- शिक्षक प्रशिक्षण व मूल्यांकन से संबंधित निकायों के बारे में जानना ।

शोध विधि: यह लेख पत्र द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से लिखा गया है इस हेतु विभिन्न रिपोर्ट, समाचार-पत्रों एवं पुस्तकों से तथ्यों का संकलन किया गया है ।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

शिक्षकों की भर्ती अंतिम नहीं होती है, बल्कि सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य हासिल करने की दिशा में आरंभिक पड़ाव होता है । भर्ती के बाद शिक्षकों के करियर को एक नया आकार देना भी उतना ही आवश्यक है ।

वैश्विक तंत्र तथा रोजगार का परिदृश्य बदलने के साथ-साथ बच्चों के लिए भी यहां यह समझना और भी जरूरी हो गया है, कैसे सीखा जाए इसलिए शिक्षा अन्य बातों के साथ-साथ महत्वपूर्ण चिंतन, रचनात्मकता, बहु-विषयक-अध्ययन, अनुकूलित नवाचार और समस्या के समाधान के विभिन्न तरीकों के सीखने पर केंद्रित होनी चाहिए ।

शिक्षा का उद्देश्य उसे और अधिक शिष्य-केंद्रित, आनंदकारी और प्रयोगात्मक बनाना होना चाहिए । शिक्षा व्यवस्था को विज्ञान एवं गणित के साथ-साथ मुख्य कारण मानविकी क्रीड़ा और खेलों को भी अपनाना चाहिए । साहित्य, भाषाओं, संस्कृति तथा संस्कारों को सम्मिलित करने के महत्व को भी नहीं भुलाया जाना चाहिए, क्योंकि यह सीखने वालों में भी सभी आयामों के विकास में मदद करेगा और उनका सामर्थ्य भी बढ़ाएगा शिक्षक जिस तरीके से विद्यार्थियों के साथ कक्षा में बात करते हैं और जो अनुभव साझा करते हैं वे विद्यार्थियों के भावनात्मक शैक्षिक तथा सामाजिक शिक्षण के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं । इसलिए शिक्षकों का प्रशिक्षण और जरूरी माना जाता है तथा शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के साथ-साथ प्रशिक्षण प्रक्रिया का निरंतर जारी रखना भी जरूरी होता ।

नई शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि "शिक्षकों को अपनी दक्षता में सुधार करने एवं अपने कार्य में नवीनतम तकनीकी और विधियों के बारे में सीखने के अवसर निरंतर दिए जाएंगे । स्थानीय, क्षेत्रीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं

अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओ के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षक विकास दिखाएं मॉड्यूल्स सहित विभिन्न माध्यम जैसे- विशेष रुप से ऑनलाइन मंच ताकि शिक्षक अपने विचारों एवं कार्य प्रणालियों को साझा कर सकें । प्रत्येक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाएगी कि अपनी रूचिअनुसार निरंतर व्यावसायिक दक्षता सुधारने के लिए कम से कम 50 घंटे के सीपीडी कार्यक्रमों में भाग ले । सीपीडी कार्यक्रमों में विशेष रुप से बुनियादी साक्षरता एवं अंक-ज्ञान के सीखने के परिणामों के आरंभिक एवं अनुकूलतम आकलन, दक्षता आधारित अध्ययन से जुड़े नवीनतम शिक्षा विज्ञान को तथा प्रयोगात्मक अध्ययन से संबद्ध नई-नई शिक्षण विधियों के साथ-साथ कला-एकीकृत, खेल-एकीकृत एवं कथाकारिता दृष्टिकोण जैसी- शिक्षण विधियों को व्यवस्थित रूप से शामिल किया जाएगा ।"

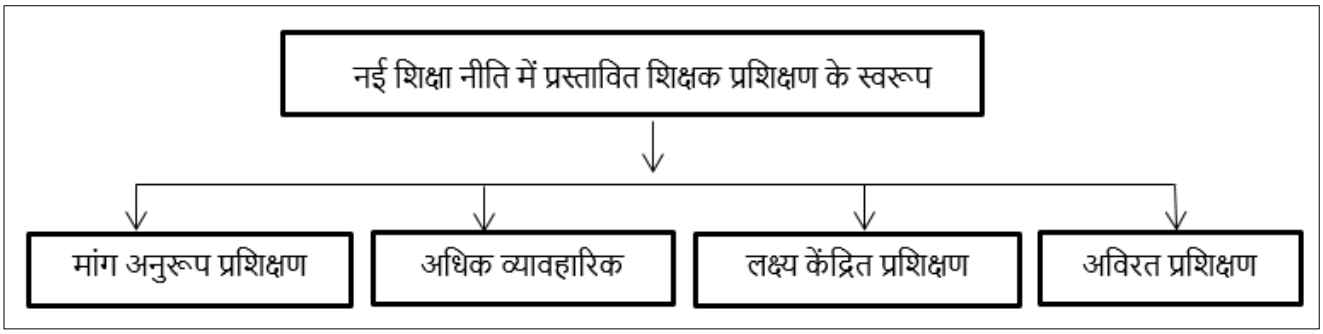

1. **मांग अनुरूप प्रशिक्षण:** इस समय प्रशिक्षण व्यवस्था सभी के लिए एक जैसी है अर्थात सभी के लिए केवल एक प्रशिक्षण मॉड्यूल है । हमारा देश विविधताओं से भरपूर है । शिक्षक, शहरी, ग्रामीण, जनजातीय दूरस्थ क्षेत्रों में पढ़ाते हैं । ऐसे तमाम कारणों को ध्यान में रखते हुए, शिक्षक की जरूरतों के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए । प्रशिक्षण शिक्षकों की आवश्यकता एवं माहौल के अनुरूप होना चाहिए ।
2. **अधिक व्यावहारिक:** इस समय शिक्षकों-प्रशिक्षकों को सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया जाता है; उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक और प्रयोगात्मक ज्ञान पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए । इसे आसानी से समझने के लिए जैसे किसी खेल के लिए खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दिया जाता है, क्या वैसे ही विभिन्न गतिविधियों के जरिए शिक्षकों को प्रशिक्षण नहीं दिया जा सकता ?
3. **लक्ष्य केंद्रित प्रशिक्षण:** फिलहाल प्रशिक्षण दिया जा सकता है, जब पाठ्यक्रम में बदला किए जाते हैं या कुछ नया जोड़ा जाता है, ऐसे प्रशिक्षण सामान्य तरह के होते हैं । प्रशिक्षण केंद्रित होना चाहिए, जो मूल्यांकन आधारित और जो परिणामों के अनुसार हो । उदाहरण के लिए भाषा के कोर्स के लिए शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षु को कविताएं सुनाने की तकनीक प्रभावी उपयोग करना सिखाया जा सकता है । इस तरह से हम सामान्य प्रशिक्षण के बजाय केंद्रित प्रशिक्षण की तरफ बढ़ सकते हैं और बेहतर नतीजे हासिल कर सकते हैं ।
4. **अविरत प्रशिक्षण:** शिक्षकों को एक बार प्रशिक्षण देने के बाद उसे पूर्ण मान लिया जाता है, इस दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है । प्रशिक्षण पूरा होने के बाद एक ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें उनसे पूछा जाए कि कक्षा में पढ़ाते समय क्या उन्हें किसी तरह की कठिनाई का सामना करना पड़ता है

यदि हां तो व्यवस्था उन कठिनाइयों को दूर करने में सहायता कर सकती है । शिक्षकों को प्रशिक्षण के बाद भी निरंतर सहायता दी जानी चाहिए उन्हें प्रशिक्षण के बाद अवलोकन के आधार पर प्रतिक्रिया दी जानी चाहिए ।

योग्यता आधारित मूल्यांकन

शिक्षकों के प्रशिक्षण के बाद अगला महत्वपूर्ण कदम शिक्षकों के मूल्यांकन का है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार उत्कृष्ट एवं प्रभावशाली कार्य करने वाले शिक्षकों को मान्यता, सराहना, पदोन्नति एवं वेतन में वृद्धि की जानी चाहिए । सभी शिक्षकों को प्रोत्साहन देकर उनका मनोबल बढ़ाया जाना चाहिए, ताकि वे बेहतर से बेहतर कार्य कर सकें । शिक्षकों का कार्यकाल, पदोन्नति तथा वेतन संरचना का योग्यता आधारित मजबूत ढांचा तैयार करना चाहिए ।

नई शिक्षा नीति में शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पेशेवर मानक (एनपीएसटी) विकसित करने का भी आदेश है, यह 2022 *तक* तय कर लिए जाएंगे । इसमें सुझाव दिया गया है, क्योंकि मानकों में विशेषज्ञता/अवस्था के विभिन्न स्तरों पर शिक्षक की अपेक्षित भूमिका तथा आवश्यक दक्षता को शामिल किया जाएगा । इसमें समय-समय पर प्रत्येक अवस्था के लिए कार्य प्रदर्शन मूल्यांकन हेतु भी मानक शामिल किए जाएंगे । एनपीएसटी सेवा पूर्व शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम की संरचना के बारे में भी बताया जाएगा । इसे राज्यों द्वारा अपनाया जा सकता है एवं कार्यकाल, व्यवसायिक-दक्षता विकास प्रयासों, वेतन वृद्धि, पदोन्नति तथा अन्य सम्मान सहित शिक्षक-करियर प्रबंधन के सभी पहलुओं को तय किया जा सकता है बिहार नायक व्यवसाय व्यावसायिक मालिकों की 2030 में समीक्षा की जाएगी और उन्हें संशोधित किया जाएगा उसके बाद व्यवस्था के प्रभाव के कड़े अनुभवी विश्लेषण करने के आधार पर प्रत्येक 10 साल में समीक्षा और संशोधन किया जाएगा ।

शिक्षकों का मूल्यांकन

वर्तमान में शिक्षकों के मूल्यांकन के लिए गोपनीय रिपोर्ट (सीआर) पद्धति लागू है । यह कार्य प्रदर्शन तथा लक्ष्य आधारित पद्धति नहीं है इसमें इस बात को नहीं महत्व दिया जाता है । शिक्षक के प्रयासों से बच्चों में सीखने की क्षमता कितनी बड़ी है, इसे और वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए कुछ और पद्धति अपनाने की आवश्यकता है । शिक्षकों के कार्य प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाना चाहिए । वेतन वृद्धि प्रदर्शन आधारित होना चाहिए इस समय प्रचलित कार्यकाल आधारित नहीं साथ ही प्रोत्साहन का प्रावधान भी होना चाहिए । इससे कार्य-प्रदर्शन सुधारने में मदद मिलेगी, इस तरह में बेहतर प्रदर्शन के परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आशा जनक प्रतीक दिखाइए होती है, क्योंकि इसमें 21वीं सदी में आवश्यक परिवर्तन को सही ढंग से उजागर किया गया है । शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुछ और सुधार अपनाकर उन्हें लागू करने से शिक्षा व्यवस्था बड़े लक्ष्यों को हासिल कर सकती है शिक्षकों को अपनी सीमा के दायरे से बाहर सोच कर शिखर को छूने में मदद कर सकती हैं । बच्चों को अपनी क्षमता को पहचानने में भी सहायता कर सकती है ।

निष्कर्ष

अतीत में यहां स्पष्ट रूप से कहा जा चुका है, कि पूर्व सेवा कालीन और सेवाकालीन शिक्षकों का प्रशिक्षण अति आवश्यक है प्रशिक्षित शिक्षकों से ही विद्यार्थी केंद्रित सिखाने के परिणाम पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा अपनाए गए बहुआयामी दृष्टिकोण से शिक्षक शिक्षा को पुनर्जीवित करने की संभावना और अधिक बढ़ जाती है विद्यार्थी अपनी पसंद के आधार पर अधिगम कर सकेंगे अधिगम कराने

हेतु विद्यार्थियों के लिए सुमार्ग बनाने में प्रशिक्षित अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । इसलिए मूल्यांकन योग्यता आधारित होना चाहिए । कार्यकाल बढ़ाने पदोन्नति करने वेतन संरचना का अवलोकन करने हेतु मजबूत ढांचा तैयार करना चाहिए । नई शिक्षा नीति 2020 में योगात्मक आकलन के बजाय नियमित एवं रचनात्मक आकलन को अपनाने की परिकल्पना बनाई गई है, जो अपेक्षाकृत अधिक योग्यता आधारित है । सीखने के साथ-साथ अपना विकास करने को बढ़ा देता है और उच्चस्तरीय कौशल जैसे कि विश्लेषण क्षमता आवश्यक चिंतन मनन करने की क्षमता एवं वैचारिक स्वच्छता का आकलन करता है ।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार रिपोर्ट ।
2. प्रेम परिहार (2020), के द्वारा शोध पत्र "नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 संभावनाएं एवं चुनौतियां" राजकीय बांगड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय डीडवाना नागौर राजस्थान भारत ।
3. मोनिका शर्मा (2021), के द्वारा शोध पत्र "नए भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति । 2020" वॉल्यूम-1, यीशु 3, 2021 पेज नंबर 59-62 ।
4. वीरेंद्र सिंह (2022), के द्वारा शोध पत्र "उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि" पब्लिकेशन आईजेआरएआर के जनवरी 2022 वॉल्यूम 9, यीशु-1 ।
5. प्रतियोगिता दर्पण हिंदी मासिक सितंबर 2020 पेज नंबर 56-57 ।
6. मासिक योजना फरवरी 2022 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पेज नंबर 39-42 ।
7. दीपा मेहता, (2019), 'शैक्षिक प्रबंधन" पी0 एच0 आई0 लर्निंग, पब्लिकेशन, प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली ।